ईद-उल-अजहा शुरू से आखरि तक (3 का भाग 1)

विवरण: मुसलमान दो त्योहार मनाते हैं: ईद उल-फ़ित्र और ईद-उल-अजहा। इन पाठों में वह सब कुछ शामलि है जो आपको ईद-उल-अजहा के बारे में जानने की जरूरत है ताकि ये आपके जीवन का हिस्सा बन सके और आप अल्लाह को खुश कर सकें।

द्वारा Imam Mufti (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशति हुआ 08 Nov 2022 - अंतमि बार संशोधति 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >पूजा के कार्य > समारोह

उद्देश्य:

· *[illegible]* के बारे में कुछ बुनयिादी तथ्य जानना।

· *[illegible]* (दस दनि) और उनके महत्व के बारे में जानना।

· *[illegible]* (अराफा का दनि) और इसके महत्व के बारे में जानना।

· *[illegible]* के इतहिास और उद्देश्य के बारे में जानना।

अरबी शब्द:

· *[illegible]* - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।

· *[illegible]* - रमजान के अंत में मुस्लमि उत्सव।

· *[illegible]* - "बलदिान का पर्व"।

· *[illegible]* - इस्लामी चंद्र कैलेंडर का नौवां महीना। यह वह महीना है जसिमें अनविार्य उपवास नर्धिारति कयिा गया है।

· *[illegible]* - मक्का की तीर्थयात्रा जहां तीर्थयात्री अनुष्ठानों का एक सेट करता है। हज इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है, जसि हर वयस्क मुसलमान को अपने जीवन में कम से कम एक बार अवश्य करना चाहएि यदि वे इसे वहन कर सकते हैं और शारीरकि रूप से सक्षम हैं।

· *[illegible]* - इस्लामी चंद्र कैलेंडर के 12वें महीने का नाम।

· *[illegible]* - अराफा का दनि वो है जब तीर्थयात्री अराफा नामक स्थान पर इकट्ठा होते हैं।

· *[illegible]* - जसिकी अनुमति है।

· *[illegible]* - इस्लामी महीने ज़लि-हज्जिा के दस दनि।

· *[illegible]* - उपवास के महीने रमज़ान के आखरिी दस दनिों मे एक धन्य रात।

· *[illegible]* - कतिना मुकम्मल है अल्लाह, हर अधूरेपन से दूर है अल्लाह।

· *[illegible]* - सभी प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह के लएि है। यह कहकर हम आभारी होते

हैं और हम स्वीकार करते हैं कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है।

- *▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯* - अल्लाह सबसे महान है।

एक मुस्लमि परविार के बनिा, क्रसिमस, फसह, या अन्य धार्मकि उत्सवों की जगह मुस्लमि त्योहारों को मनाना काफी बदलाव भरा हो सकता है। लेकनि, चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। बदलाव करने के लएि पहला कदम कसिी वषिय को पढ़ना और सीखना है। दूसरी सलाह यह है कि दएि गए सुझावों का पालन करें। तीसरा, अल्लाह से दुआ करें, वह वास्तव में हमारी मदद करने वाला है। ये पाठ आपको सरल सुझावों के साथ-साथ वह सब कुछ सखिाएंगे जो आपको जानने की जरूरत है ताकि आप इस अद्भुत त्योहार से अधकि लाभ उठा सकें और पूरी तरह से इस्लामी जीवन का अनुभव कर सकें।

ईद-उल-अजहा बुनियादी तथ्य

इस्लाम में दो खूबसूरत उत्सव हैं जो आपके जीवन का हस्सिा होंगे: ईद उल-फ़ति्र और ईद-उल-अजहा। ईद-उल-अजहा के बारे में कुछ बुनियादी तथ्य:

- ईद-उल-अजहा, इसका अनुवाद "बलदिान का पर्व" के रूप में कयिा जा सकता है।

- ईद-उल-अजहा हज से जुड़ा हुआ है - पवति्र शहर मक्का की तीर्थयात्रा जहां हर साल दुनयिा भर से 2 मलियिन मुसलमान जाते हैं।

- ईद-उल-अजहा चार दनिों तक चलता है। दूसरी ओर, रमजान के समापन पर मनाया जाने वाला ईद उल-फ़ति्र एक दनि का उत्सव है।

- ईद-उल-अजहा के समय, कई मुस्लमि परविार एक जानवर की बलि देते हैं और उसके मांस को गरीबों के साथ साझा करते हैं।

अल्लाह के आदेश के अनुसार पैगंबर मुहम्मद के समय से ही दोनों मुस्लमि त्योहार मनाए जा रहे हैं। इसलएि वे अल्लाह की ओर से हैं और प्रामाणकि हैं। कसिी इंसान ने उन्हें नहीं बनाया। इसका अर्थ क्या है? हमारे पैगंबर ने हमें बताया,

"ये खाने, पीने और अल्लाह के स्मरण के दनि हैं।"[1]

दूसरे शब्दों में, हम अपने नर्मिाता को भूले बनिा हलाल भोजन का आनंद उठा सकते है और त्यौहार का आनंद ले सकते हैं।

ईद-उल-अजहा से पहले

जैसा कि पहले बताया गया है, ईद-उल-अजहा हज से जुड़ा हुआ है । हज करना इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है जो इस्लामी कैलेंडर के 12वें महीने (ज़लि-हज्जिा) में कयिा जाता है। ईद-उल-अजहा दुनयिा भर के मुसलमानों द्वारा ज़लि-हज्जिा महीने के 10वें दनि मनाया जाता है। इस महीने के पहले दस दनिों का वशिेष लाभ है। अरबी में इन्हें 'अल-अय्याम उल-अशर' कहते हैं। पूजा का मौसम कई लाभ लाता है, जैसे कि कसिी के दोषों को सुधारने का अवसर और कमयिों या कसिी भी चीज को जो उसने छोड़ दी है उसको पूरा करने का

अवसर।

'दस दनि' के गुण

'अल-अय्याम उल-अशर' (दस दनि) के पांच गुण नम्निलखिति हैं:

1. अल्लाह क़ुरआन में इनकी कसम खाता है, और कसिी चीज की कसम खाना इसका सर्वोपरि महत्व और वास्तवकि लाभ दखिाता है। अल्लाह कहता है:

> **"शपथ है भोर की! तथा दस रात्रयिों की!" (क़ुरआन 89:1-2)**

क़ुरआन के प्रारंभकि अधकिारयिों ने समझाया है कि यह छंद ज़लि-हज्जिा के पहले दस दनिों को संदर्भति करता है।

2. हमें इन दनिों के महत्त्व को और अधकि समझाने के लिए, पैगंबर ने गवाही दी कि ये दुनयिा के "सर्वश्रेष्ठ" दनि हैं। ये दस दनि साल के अन्य सभी दनिों से बेहतर हैं, बनिा कसिी अपवाद के, रमज़ान के आखरिी दस दनि भी नहीं ! लेकनि रमजान के आखरिी दस रातें बेहतर हैं, क्योंकि उनमें लैलत-अल-क़द्र ("शक्तकिी रात") शामलि है।

3. अल्लाह को इन दस दनिों की तुलना मे कोई और दनि अधकि प्रयि नही है, जसिमे अल्लाह अच्छे कर्मों को अधकि पसंद करता है, इसलिए एक मुसलमान को इन दनिों मे "सुभानअल्लाह", "अल्हम्दुलल्लिाह" और "अल्लाहु अकबर" का बार-बार पाठ करना चाहिए।

4. इन दस दनिों में बलदिान और हज के दनि शामलि हैं।

5. ज़लि-हज्जिा के नौवें दनि को 'यौम उल अराफ़ा' (अराफ़ा का दनि) कहा जाता है। यह वह दनि है जब तीर्थयात्री मक्का से छह मील दूर अराफा के मैदान में इकट्ठा होते हैं। अराफा के दनि में ही कई गुण हैं।

अराफा के दनि के गुण और इस दनि क्या करना चाहिए

1. यौम अल-अराफा वह दनि है जसि दनि अल्लाह ने इस्लाम धर्म को पूरा कयिा।

2. यौम अल-अराफा दुनयिा में कसिी भी जगह की सबसे बड़ी सभाओं में से एक है।

3. यौम अल-अराफा एक ऐसा दनि है जसि दनि प्रार्थनाओं का उत्तर मलिता है। इस दनि प्रार्थना करने के शष्टिाचारों में से एक है हाथ उठा के मांगना क्योंकि अल्लाह के दूत ने अराफा में दुआ की, उनके हाथ उनकी छाती तक उठे थे। (अबू दाऊद)

4. जो लोग हज नहीं कर रहे हैं उनको अराफा के दनि उपवास करने की सलाह दी जाती है। पैगंबर ने कहा,

> "अराफ़ा के दनि का उपवास दो वर्षो के लिए प्रायश्चति है, एक वर्ष इससे पहले का और एक इसके बाद का।" [2]

> "लेकनि तीर्थयात्रयिों के लिए अराफा में अराफा के दनि का उपवास करना नापसंद कयिा गया है जैसा कि अल्लाह के दूत ने बताया था।"[3]

यदि आप बलि देना चाहते हैं या आपके लिए बलि दिया जा रहा है, तो आपको इन दस दनिों के शुरु होने पर अपने बाल और नाखून काटना बंद कर देना चाहिए, जब तक कि आप बलि नहीं दे देते या आपकी ओर से बलि नही दी जाती।

ईद-उल-अजहा का इतहिास और उद्देश्य

ईद-उल-अजहा का इतहिास पैगंबर इब्राहमि के समय से है, ये यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। ईद-उल-अजहा उस महान घटना की याद दलिाता है जब अल्लाह ने इब्राहीम को सपने में आज्ञाकारिता के लिए अपने बेटे का बलदिान करने को कहा था।

> **"फरि जब वह पहुंचा उसके साथ चलने-फरिने की आयु को, तो इब्राहीम ने कहा: हे मेरे प्रयि पुत्र! मैं देख रहा हूं स्वप्न में कि मैं तुझे वध कर रहा हूं। अब, तू बता कि तेरा क्या विचार है? उसने कहा: हे पिता! पालन करें, जिसका आदेश आपको दयिा जा रहा है। आप पायेंगे मुझे सहनशीलों में से, यदि अल्लाह की इच्छा हूई।"' (क़ुरआन 37:102)**

जैसे ही इब्राहीम अपने बेटे की बलि देने वाला था, अल्लाह ने उसे बताया कि उसका "बलदिान" पूर्ण हो गया है। ऐसा करके उन्होंने दिखाया था कि अपने ईश्वर के प्रति उनका प्यार अन्य सभी चीज़ों से बढ़कर है, कि वह अल्लाह के अधीन होने के लिए कोई भी बलदिान कर सकता है। कहानी का एक संस्करण बाइबलि के पुराने नियिम में भी है।

कुछ लोग अस्पष्ट हैं कि अल्लाह ने इब्राहीम को अपने ही बेटे को मारने के लिए क्यों कहा। प्रसिद्धि प्रतिष्ठित इस्लामी विद्वान इब्न अल-क़य्यम ने समझाया, "उद्देश्य इब्राहमि का अपने बेटे को मारना नहीं था; बल्कि उसका अपने दलि में बलदिान करना था, ताकि सारा प्यार सिर्फ अल्लाह के लिए हो।"

इसलिए यह हमारी परंपरा का एक हिस्सा है कि ज़िलि-हज्जिा के दस धन्य दनिों के दौरान और ईद-उल-अजहा के दनि हम इब्राहीम के बलदिान को याद करते हैं। हम इस बात पर चिंतन करते हैं कि किसि बात ने उसे इतना मजबूत विश्वासी बनाया और अल्लाह का प्रयि बनाया था, जिसे अल्लाह ने आशीर्वाद दयिा और उन सभी राष्ट्रों का सरदार बनाया, जिनका अनुसरण कयिा जाना था।

फुटनोट:

[1] □□□□ □□-□□□□□□

[2] □□□□ □□□□□□□

[3] □□□ □□□□

इस लेख का वेब पता:
http://www.newmuslims.com/hi/lessons/207

कॉपीराइट © 2011-2022 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षति।

ajsultan